इकाई –12

रामायण और महाभारत की उपजीव्यता

रामायण–समय निरूपण, टीकाकार, राम और सीता का चरित्र, इतर रामायण, महाभारत–रचयिता, विकास के तीन क्रमिक स्वरूप, रचना–काल, ग्रन्थ –परिचय, महाभारत के टीकाकार, महाभारत का वैशिष्ट्य, रामायण–महाभारत की तुलना

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 रामायण और महाभारत की उपजीव्यता

12.2.1 रामायण की उपजीव्यता

12.2.2 महाभारत की उपजीव्यता

12.3 रामायण

12.3.1 समय – निरूपण

12.3.2 टीकाकार

12.3.3 राम और सीता का चरित्र

12.3.4 इतर रामायण

12.4 महाभारत

12.4.1 रचयिता

12.4.2 विकास के तीन क्रमिक स्वरूप

12.4.3 रचना – काव्य

12.4.4 ग्रन्थ – परिचय

12.4.5 महाभारत के टीकाकार

12.4.6 महाभारत का वैशिष्ट्य

12.5 रामायण – महाभारत की तुलना

12.6 सारांश

12.7 शब्दावली

12.8 बोध – प्रश्न

12.9 उपयोगी ग्रन्थ

12.10 बोध–प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

- आप प्रथम प्रश्न पत्र की इकाई 12 में रामायण एवं महाभारत का परिचय प्राप्त करेंगे।
- आप जानेंगे कि किस प्रकार इन दोनों ग्रन्थों ने परवर्ती साहित्य को प्रभावित किया और उसके उपजीव्य बने।

- आप रामायण के रचना काल, उसके टीकाकारों के विषय में भी जानेंगे और राम तथा सीता का चरित्र एवं रामायण पर आधारित अन्य रामायणों का परिचय भी प्राप्त करेंगे।
- आप महाभारत के रचयिता, रचना–काल उसके क्रमिक विकास के विषय में भी जानेंगे। उसके वैशिष्ट्य का भी परिचय प्राप्त करेंगे।
- आप रामायण और महाभारत का तुलनात्मक अध्ययन भी करेंगे।

12.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि आदि कवि और उनकी कृति रामायण आदि महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है। तमसा के तट पर जाते हुए व्याघ द्वारा मारे गये क्रौंच पक्षी के वियोग में विलाप करने वाली क्रौंची के करूण क्रन्दन से वाल्मीकि का शोक शापात्मक श्लोक के रूप में फूट पड़ा –

मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः सभाः। यत्क्रौंचमथुनादेकमवधीः काममोहितम्।। यही अनुष्टुप् छंद और वाल्मीकि के मुख से निःसृत काव्यधारा आगामी काव्य – सरणि का उद्गम स्थल बनी। रामायण 7 काण्डों, पांच सौ सर्गों में विभक्त 24,000 श्लोकों की चतुर्विंशतिसाहस्त्री संहिता है, जिसमें जननायक मर्यादा पुरूषोत्तम राम के चरित्र का काव्यमय वर्णन है। यह न केवल महाकाव्य है अपितु इसे संहिता, इतिहास, आख्यान, आर्षकाव्य, उपजीव्य काव्य और विकसन शील महाकाव्य के रूप में भी जाना जाता है। रामायण में समाज में व्याप्त बुराइयों, विकृतियों, सामन्तीय व्यवस्था की दुर्बलताओं का चित्रण करते हुए उन पर मानवीय विजय का आदर्श स्थापित किया गया है। हर सामाजिक, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय चरित्र का सर्वोच्च आदर्श इसमें होने से ही यह ग्रन्थ युगों युगों तक महनीय एवं प्रेरणा स्त्रोत बन सका। डॉ. बलदेव उपाध्याय ने इसे गृहस्थाश्रम का महाकाव्य कहा है क्योंकि इसमें भारतीय गार्हस्थ्य जीवन का समुज्ज्वल चित्रण मिलता हैं। एक गृहस्थ जीवन से सम्बन्ध रखने वाले माता–पिता, भाई, मित्र, पत्नी, सेवक तथा अन्य परिजन सभी का चरित्र आदर्शपूर्ण एवं भारतीय जीवन का प्रतीक है। डॉ. वचनदेव कुमार का कथन है ''इस महाकाव्य में भारत के महोच्च परिवार की त्याग कथा वर्णित है। पिता चक्रवर्ती सम्राट् दशरथ का पुत्र स्नेह के लिये तन त्याग, पुरूषोत्तम राम का पिता दशरथ एवं माता कैकेयी की इच्छा पूर्ति के लिये गृह–त्याग, पत्नी सीता तथा भाई भरत का अग्रज श्री राम के लिये राज्य त्याग स्नेह के कारण सम्पन्न हो पाया है। भारतीय संस्कृति के मूलाधार त्याग की उज्ज्वल गाथा है – रामायण, ऐसा निः संकोच कहा जा सकता है।''

महाभारत विश्व भर के साहित्य में सबसे विशालकाय महाकाव्य है। यह केवल दीर्घ कलेवर के कारण ही नहीं अपितु विषय वस्तु, चरित्र–चित्रण, नैतिक मूल्य, आदर्श, धर्म, राजनीति आचारादि की दृष्टि से भी संपूर्ण साहित्य की अमूल्य धरोहर है। यह हमारी परम्पराओं, सांस्कृतिक उपलब्धियों का विशद इतिहास प्रस्तुत करता है। विषयवस्तु की विविधता एवं विपुलता के कारण इसे भारतीय संस्कृति का विश्व कोष कहा जाता है। आख्यानों – उपाख्यानों का तो यह भंडार ही है। उसी ने विश्व को श्रीमद्भगवद्गीता का जैसा धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म का दुर्लभ ग्रन्थ दिया है।

12.2 रामायण और महाभारत की उपजीव्यता

रामायण और महाभारत हमारी राष्ट्रीय चेतना एवं संस्कृति के परिचायक ऐसे बृहद् आकर ग्रन्थ हैं जिनसे परवर्ती युग के साहित्यकारों ने शताब्दियों तक स्फूर्ति और प्रेरणा ग्रहण की एवं उससे उनका रचना संसार अनुप्राणित रहा इसीलिये इन्हें उपजीव्य काव्य कहा जाता है। अवान्तरकालीन समग्र भारतीय साहित्य पर इनका व्यापक प्रभाव पड़ा है। न केवल संस्कृत अपितु हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के भी ये प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। संस्कृत का तो कोई भी कवि ऐसा नहीं है जिस पर इन दोनों ग्रन्थों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव न पड़ा हो। न केवल विषय वस्तु या कथा की दृष्टि से ही ये परवर्ती साहित्य के मूल स्त्रोत रहे अपितु लौकिक संस्कृत साहित्य में काव्य का जो विकास हुआ, उसके भी ये

मुख्य स्रोत रहे। छंदो का स्वरूप, महाकाव्य की अवधारणा, रस और अलंकारों के मानदंड इन्हीं दोनों महनीय ग्रन्थों की देन हैं। ऋषियों द्वारा प्रणीत ये दोनों आर्ष काव्य युगों – युगों तक भारतीय मनीषा को आलोड़ित, प्रकाशित एवं समृद्ध करने की सामर्थ्य रखते हैं।

12.2.1 रामायण की उपजीव्यता

वाल्मीकि कृत रामायण की उपजीव्यता को हम रवीन्द्रनाथ ठाकुर के इन उद्‌गारों में स्पष्ट देख सकते हैं – ''रामायण में केवल कवि का ही परिचय नहीं है किंतु भारतवर्ष का परिचय प्राप्त होता है। इस रामायण की कथा से भारतवर्ष के क्या बालक, क्या वृद्ध, क्या स्त्रियां सबको केवल शिक्षा ही नहीं मिली है, शिक्षा के साथ–साथ उन्हें आनन्द भी मिला है। भारतवासियों ने रामायण को शिरोधार्य ही नहीं माना है, इसको इन्होंने अपने हृदय सिंहासन पर स्थापित किया है – भारत के हृदय का अधिक झुकाव पूर्णता की ओर है। उसी पूर्णता की आकांक्षा को जगाकर और तृप्त करके रामायण के कवि ने भारत के भक्त हृदय को चिरकाल के लिये बिना मोल का दास बना लिया है।''

रामायण में वर्णित उपाख्यानों के आधार पर अनेक काव्य ग्रन्थों की रचना हुई। डॉ. बलदेव उपाध्याय रामायण की उपजीव्यता पर कहते है – ''वाल्मीकि समग्र कवि समाज के उपजीव्य हैं – विशेषतः कालिदास तथा भवभूति के। इन दोनों महाकवियों ने रामायण का गाढ़ अनुशीलन किया था और इनकी कविता में हमें जो रस मिलता है, उसमें रामायण की भक्ति कम सहायक नहीं रही है।'' रामायण की कथा को आधार बनाकर कालिदास ने रघुवंश, कुमारदास ने जानकीहरण, भट्टि ने रावणवध, डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी ने सीताचरितम् आदि महाकाव्य, रचे। प्राकृत भाषा में प्रवरसेन का सेतुबंध, चंपू काव्यों में भोज का रामायण चंपू तथा नाटकों में भास के प्रतिमा और अभिषेक, भवभूति के महावीरचरित और उत्तररामचरित, मुरारि का अनर्घराघव, जयदेव का प्रसन्नराघव, राजशेखर का बालरामायण, शक्तिभद्र का आश्चर्यचूडामणि, दिङ्.नाग की कुन्दमाला, रामचन्द्र का जानकी परिणय आदि ग्रन्थों की रचना की गयी। क्षेमेन्द्र ने रामायण मंजरी में रामायण का सार प्रस्तुत किया।

12.2.2 महाभारत की उपजीव्यता

महाभारत में जो कहा गया है उससे स्वतः उसकी उपजीव्यता प्रमाणित होती है – धर्मे च अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।
इतिहासोत्तमादस्माज्जायन्ते कविबुद्धयः।
इदं कविवरैः सर्वैराख्यानमुपजीव्यते।।

भारतीय संस्कृति के इस विश्वकोष में संघर्ष संकुल भारतीय जीवन की यथार्थ कथा को कौरव–पांडव युद्ध कथा के माध्यम से दर्शाया गया है, जिसमें दो जीवन मूल्यों का चित्र उपस्थित करते हुए युगीन चेतना एवं विचार धाराओं को समेटने का महद् प्रयास किया गया है। समस्त परवर्ती साहित्य किसी ने किसी रूप में इसका 'ऋणी है। इसीलिये, कहा जाता है कि 'यन्न भारते तन्न भारते।'

संस्कृत का विश्वविश्रुत श्रेष्ठ नाटक 'अभिज्ञानशांकुतलम्' महाभारत के शांकुतलोपाख्यान पर आधारित है। भास के छः रूपक, भारवि का किरातार्जुनीय, भट्टनारायण का वेणीसंहार, राजशेखर का बालभारत, माघ का शिशुपालवध, श्रीहर्ष का नैषधीयचरित, त्रिविक्रमभट्ट का नलचम्पू जैसी प्रसिद्ध रचनायें महाभारत को उपजीव्य बनाकर ही लिखी गयी। महाभारत के किसी कथांश या चरित्र या नीति वर्णन या आख्यान को लेकर भारतीय भाषाओं के अनेक साहित्यकारों ने सरस्वती के कोष को समृद्ध किया।

12.3 रामायण

12.3.1 समय निरूपण

रामायण के रचनाकाल का निर्धारण निश्चित रूप से करना अत्यधिक कठिन है किंतु बाह्य साक्ष्यों के आधार पर, उस समय की भौगोलिक, राजनीतिक स्थिति के आधार पर इसकी अपरसीमा निर्धारित की जा सकती है। (1) सभी भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान् इस विषय में एकमत हैं कि रामायण में बौद्ध धर्म का कोई उल्लेख नहीं है। बौद्ध एवं जैन साहित्य में रामकथा का उल्लेख हैं किंतु रामायण में इन धर्मों का कोई संकेत प्राप्त नहीं होता। (2) रामायण में चित्रित संस्कृति एवं समाज की दशा भी 500 ई.पू. के पहले की प्रतीत होती है। (3) रामायण में कौशाम्बी, कान्यकुब्ज, कांपिल्य आदि नगरों का उल्लेख है किंतु पाटलिपुत्र का नहीं, जबकि बालकांड के पैंतीसवें सर्ग में राम उसी स्थान से गंगा पार करते हैं जहां यह नगर बसाया गया था। पाटलिपुत्र की स्थापना 380 ई. पू. के पहले हो चुकी थी। बौद्ध काल में अयोध्या के लिये साकेत शब्द प्रचलित हो गया था, जिसका रामायण में उल्लेख नहीं मिलता। रामायणकालीन मिथिला और विशाला ये दो स्वतंत्र राजधानियां थी जो बुद्ध के समय एक हो गई थी। लव ने श्रावस्ती नगरी बसायी थी जिसका उल्लेख उत्तरकांड में एक बार आया है जबकि बौद्ध युग की यह प्रसिद्ध नगरी थी। ये सभी प्रमाण रामायण के बुद्ध से पूर्व होने को सिद्ध करते हैं। (4) रामायण की भाषा में अनेक अपाणिनीय प्रयोग मिलते हैं अतः रामायण की रचना पाणिनि (500 ई.पू.) से पूर्व हो चुकी थी। (5) प्रथम शती ईसा के उत्तरार्ध में विमलसूरि ने रामायण पर आधारित प्राकृत महाकाव्य पउमचरिउ की रचना की। दूसरी शती ईस्वी में रचित कुमारलात के ग्रन्थ कल्पनामंडितिका में रामायण के सार्वजनिक गायन का उल्लेख पाया जाता है। इससे प्रमाणित होता है ईसा के आसपास रामायण का व्यापक प्रसार हो चुका था।

अतः इन सभी आधारों पर यह निश्चित होता है कि रामायण का परिनिष्ठित वर्तमान स्वरूप बुद्ध के समय से पहले स्थिर हो चुका था।

डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी के अनुसार ''निष्कर्षतः रामायण के मूल भाग का रचनाकाल वैदिक साहित्य के अंतिम चरण तथा बौद्धयुग के पूर्व 700 ई. पू. के लगभग मानना उचित है।''

12.3.2 टीकाकार

रामायण मध्ययुग तक आते–आते अत्यन्त लोकप्रिय हो गई थी और जनमानस में इसने अपनी गहरी पैठ बना ली थी। डॉ. ऑफ्रेष्ट ने अपनी संस्कृत पांडुलिपियों की सूची में इसकी 30 टीकाओं का उल्लेख किया है। कुछ महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध टीकाएं निम्न हैं –

1. रामानुजीय (1400 ई.)
2. वेंकटेश की सर्वार्थसार (1475 ई.)
3. महेश्वर विरचित रामायण तत्त्व दीपिका (1600 ई.)
4. वैद्यनाथ दीक्षित की रामायण दीपिका (1500 ई.)
5. लोकनाथ कृत मनोहरा (16 वीं शती)
6. माधवयोगी कृत अमृतकटक (1650 ई.)
7. ईश्वरदीक्षित कृत विवरण (1525 ई.)
8. गोविन्दराज कृत रामायण भूषण (1550 ई.)
9. अहोबल की वाल्मीकिहृदय (1575 ई.)
10. राजारामवर्मा कृत रामायण तिलक (1700 ई.)

11. बंशीधर एवं शिवसहाय कृत रामायणशिरोमणि (1865 ई.)

उपुर्यक्त टीकाओं में रामायण तत्त्वदीपिका, भूषण, तिलक एवं अमृतकटक आदि टीकाएं अपनी प्रामाणिकता के आधार पर विद्वानों में आदर पाती रही है।

13.3.3 राम का चरित्र

वाल्मीकि ने ही सर्वप्रथम राम की छवि मर्यादापुरूषोत्तम के रूप में स्थापित की। राम के चरित्र में समुद्र के समान गंभीरता एवं हिमालय के समान धैर्य है। अपने सहिष्णुता, परदुःखकातरता, स्नेह, त्याग शौर्य, गाम्भीर्यादि गुणों के कारण ही उनका व्यक्तित्व मनुष्यत्व से ऊपर उठकर दिव्यत्व तक पंहुच गया और दुर्लभ भव्यता को प्राप्त हुआ। जिन्हें देखने पर आंखे और मन हटे ही नहीं, ऐसा सुदर्शन रूप और व्यक्तित्व है श्रीराम का –

नहि तस्मान्मनः कश्चिच्चक्षुषी वा नरोत्तमात्।
नरः शक्नोत्यपाक्रष्टुमतिक्रान्तोऽपि राघवे।।

रविन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में – ''यदि कवि वाल्मीकि मनुष्य के चरित्र का वर्णन न कर – देवचरित्र का वर्णन करते, तो अवश्य ही रामायण का गौरव कम हो जाता, उसे काव्य की दृष्टि से क्षतिग्रस्त होना पड़ता। राम के मनुष्य होने से ही रामचरित्र की इतनी महिमा है। रामायण में देवता ने पदच्युत होकर अपने को मनुष्य नहीं बनाया, मनुष्य ही अपने गुणों के कारण देवता बन गया है।'' राम के व्यक्तित्त्व में भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्य मूर्तिमान होते हैं। वे सदैव दान ही करते हैं, प्रतिग्रह नहीं लेते, कभी अप्रिय भाषण नहीं करते, जीवन संकट उपस्थित होने पर भी नहीं –

दद्यान्न प्रतिगृह्णीयान्न ब्रूयात् किंचिद्प्रियम्।
अपि जीवितहेतोर्वा रामः सत्यपराक्रमः।।

राम को अपकार का स्मरण न करने वाला, अवध्य पर क्रोध न करने वाला, मधुर एवं दृढ़प्रतिज्ञ चित्रित किया गया है –

नास्य क्रोधः प्रसादो वा निरर्थोऽस्ति कदाचन।
हन्त्येष नियमाद् वध्यानवध्येषु न कुप्यति।।

उनकी वचनबद्धता ऐसी है कि 'रामो द्विर्नाभिभाषते'। चित्त की स्थिरता और निर्विकारता ऐसी कि राज्याभिषेक के स्थान पर वनवास मिलने पर भी वे विचलित नहीं होते –

न चास्य महती लक्ष्मींराज्यनाशोऽपकर्षति।
लोककान्तस्य कान्तत्वाच्छीतरश्मेरिव क्षपा।।

न वनं गन्तुकामस्य व्यजतश्च वसुन्धराम्।
सर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रिया।।

वनवास देने वाली माता कौशल्या के प्रति उनकी चिंता व स्नेह, अपने शत्रु रावण के प्रति भी मृत्यूपरान्त आत्मीयता जैसे गुण, औदार्य और गरिमा ने ही राम को भारतीय जनमानस का सर्वाकालिक आराध्य एवं महानायक बनाया। डॉ. बलदेव उपाध्याय ने तो यहाँ तक लिख दिया कि 'यह मानवजीवन रामदर्शन के बिना निरर्थक हैं। राम जिसको नहीं देखते, वह लोक में निन्दित है और जो व्यक्ति राम को नहीं देखता, उसका भी जीवन निन्दित है। उसका अन्तःकरण स्वयं उसकी निंदा करने लगता है –

यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति।
निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हते।।

सीता – सीता भारतीय नारीत्व के उदात्त आदर्श की सर्वोच्च प्रतीक है शायद इसीलिये उनकी अयोनिजा उत्पति की कल्पना की गयी। विनम्र, मधुरभाषिणी, पवित्र, बुद्धिमती, मर्यादाशीला, स्वाभिमानिनी सीता ने अपने पातिव्रत्य तेज से अन्य पतिव्रताओं को आक्रान्त कर दिया है। जब राम उसे वन की भीषणता से डराना चाहते है तो वह बहुत सहजता से कहती है – **'त्वया सह गमिष्यामि मर्दन्ती कुशकण्टकान्।'** मैं तुम्हारे रास्ते के कुश–कांटे रौंदती हुई तुम्हारे साथ चलूंगी। पति के प्रति अनन्य विश्वास, आस्था और निष्ठा सीता के चरित्र में कूट–कूट कर भरी हुई है, इसी के बल पर वह अपने पति के पराक्रम से आश्वस्त रहकर रावण को निरन्तर तिरस्कृत करती है और पति मिलन की प्रतीक्षा करती है। सीता तेजस्विता एवं तपोवृत्ति का अनुपम उदाहरण है। अशोक वाटिका में हनुमान उन्हें तुरंत पहचान लेते हैं –

इमामपि विशालाक्षीं रक्षितां स्वेन तेजसा।
रावणो नातिवर्तेत वेलामिव महोदधेः।।

राक्षण के घर रहने पर लोकनिंदा होने पर सीता अत्यन्त तेजस्विता पूर्वक अपना निर्दोष पक्ष रखती है –

यदहं गात्रसंस्पर्शं गतास्मि विवशा प्रभो।
कामकारो न मे तत्र दैवं तत्रापराध्यति।।

मदधींन तु यन्तन्मे ह्रदयं त्वयि वर्तते।
पराधीनेषु गात्रेषु किं करिष्याम्यनीश्वरी।।

अपमानित होने पर सीता अपने पति को व्यंगबाणों से विद्ध करती हुई कहती है –

त्वया तु नृपशार्दूल रोषमेवानुवर्तता।
लघुनेव मनुष्येण स्त्रीत्वमै पुरस्कृतम्।।

न प्रमाणीकृतः पाणिर्बाल्ये बालेन पीडितः।
मम भक्तिश्च शीलं च सर्वं ते पृष्ठतः कृतम्।।

हे श्रेष्ठ राजन्! क्रोधावेश में आकर आपने एक ओछे पुरूष की भांति केवल मेरे स्त्रीत्व अंश को ही सबके सामने रखा। बाल्यावस्था में ही परिणय विधि में ग्रहण किये गये मेरे हाथ को भी प्रमाण नहीं माना और मेरी समस्त पति भक्ति एवं सदाचरण को आपने पीछे कर दिया।

यही भारतीय नारी की गरिमा है जिससे सीता का आचरण पवित्र एवं शुद्ध है और जिसके साक्षी स्वयं अग्निदेव एवं स्वयं धरित्री बनते हैं।

12.3.4 उत्तर रामायण

वाल्मीकि की रामायण से प्रेरित होकर संस्कृत एवं अन्य भाषाओं में राम कथाओं की रचना हुई जिनमें प्रमुख हैं – योगवासिष्ठ, अध्यात्मरामायण, आनन्द–रामायण, अद्‌भुत रामायण, भुशुंडिरामायणादि। इनके अतिरिक्त जैन परम्परा में विमलसूरि रचित पउमचरिउ प्राकृत में और रविषेण का पद्‌मचरित भी रामायण काव्य हैं। तमिल में कंबन रामायण, बंगला में कृत्तिवास रामायण, मराठी में एकनाथ रामायण, असमी भाषा में राघव कंदली, तेलगू में रंगनाथ रामायण और अवधि में रामचरितमानस की रचना हुई। राम–चरितमानस समस्त उत्तर भारत में जन–जन में अत्यन्त लोकप्रिय एवं प्रचलित हुई।

12.4 महाभारत

12.4.1 रचयिता

महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं जो पराशर ऋषि तथा सत्यवती के पुत्र थे। इनका नाम

कृष्णद्वैपायन भी है क्योंकि इनका जन्म एक द्वीप में हुआ था और इनका वर्ण कृष्ण था। ये ही अठारह पुराणों के रचयिता भी हैं। इन्होंने वेदों का विभाजन किया था। **विव्यास वेदान् यस्मात् स तस्मात् व्यास इति स्मृतः।** इसीलिये ये वेदव्यास कहलाए। ये स्वयं महाभारत के एक पात्र भी हैं और धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर इनकी ही नियोगज संतानें हैं। महाभारत में उसके रचयिता के विषय में कहा गया है –

त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थाय कृष्णद्वैपायनो मुनिः।
महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमुत्तमम्।।

कृष्णद्वैपायन मुनि ने तीन वर्षों तक निरन्तर जागते रहकर महाभारत नामक आख्यान की रचना की। कुछ भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि महाभारत एक व्यक्ति की रचना नहीं है। लेकिन यह निश्चित है ऐसी कृति व्यास जैसे मेधा – सम्पन्न प्रज्ञापुरूष की लेखनी से ही निःसृत हो सकती है। यह संभव है कि बाद के कवियों ने उसमें क्षेपक और प्रक्षिप्त अंश जोड़कर उसे विशाल आकार दे दिया हो।

12.4.2 विकास के तीन क्रमिक स्वरूप

महाभारत के रचयिता वेदव्यास हैं किंतु इसकी रचना एक बार में ही नहीं हुई है। प्रारम्भ में इसका स्वरूप संक्षिप्त एवं लघु था। प्राप्त प्रमाणों के आधार पर विद्वानों का अनुमान है कि इसका तीन बार परिवर्धन व संशोधन किया गया और इसके वर्तमान स्वरूप में आने में कई शताब्दियां लगी। यह जय, भारत एवं महाभारत इन तीन सोपानों में विकसित हुआ।

जय – यह पहला संस्करण था और मूल महाभारत यही है जो व्यास ने लिखी। महाभारत में ही इसे जयसंहिता कहा गया है –

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।
जय नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यं विजिगीषुणा।

महर्षि व्यास ने जय संहिता की रचना 8800 श्लोकों में की जिसका प्रमाण महाभारत में ही मिलता है –

अष्टौ श्लोकसहस्त्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च।
अहं वेत्ति शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा।।

व्यास ने अपनी यह रचना अपने शिष्य वैशंपायन को सुनाई। वैशंपायन ने राजा जनमेजय के नागयज्ञ के अवसर पर इस कथा का प्रवचन किया। जनमेजय ने जो शंकायें या प्रश्न किये वे भी इसमें जोड़ दिये गये, इस प्रकार जय संहिता को विस्तृत रूप मिला और वह 24000 श्लोक वाला भारत बन गया।

भारत– चतुर्विंशतिसाहस्त्रीं चक्रे भारतसंहिताम्।
उपारव्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः।।

भारत संस्करण में उपारव्यानों का समावेश नहीं किया गया था।

महाभारत – महाभारत का अंतिम संस्करण जिसमें 1 लाख श्लोक थे तब बना जब सौति ने नैमिषारण्य में शौनकादि ऋषियों को महाभारत सुनाया। तपस्वियों व अन्य श्रोताओं द्वारा उपस्थित प्रश्नों व उनके समाधानों से इसके कलेवर में वृद्धि हो गई। यह संस्करण उपारव्यानों से युक्त था।

इदं शतसहस्त्रं तु लोकानां पुण्यकर्मणाम्।

उपाख्यानैः सह ज्ञेयमायं भारतमुत्तमम् ।।

सौति ने इसमें हरिवंश नामक एक बृहद् परिशिष्ट भी जोड़ दिया। भारवृद्धि एवं महत्त्व वृद्धि हो जाने से इसे अब महाभारत कहा जाने लगा –

महत्त्वाद् भारवत्वाच्च महाभारतमुच्यते।

कुछ विद्वान् महाभारत के विकास के दो ही चरण स्वीकार करते हैं व 'जय' को 'भारत' से अलग नहीं मानते और 8800 श्लोकों को कूट पद्य मानते हैं। इसका विकास दो चरणों में हुआ हो या तीन चरणों में, यह तो निश्चित है यह क्रमिक विकास का परिणाम है, शतसाहस्त्री संहिता अनेक वर्षों में जाकर विकसित हुई है।

12.4.3 रचनाकाल

रामायण के समान ही महाभारत के रचनाकाल की अपरसीमा एवं पूर्व सीमा का अनुमान विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर किया जा सकता है।

1. 445 ई. के गुप्त राजाओं के शिलालेख में महाभारत का उल्लेख शतसाहस्त्री संहिता के रूप में है। पांचवी शती के दानपत्रों में भी महाभारत को धर्मशास्त्र के रूप में उद्धृत किया गया है। अतः चौथी–पांचवी शताब्दी तक 1 लाख श्लोकों वाली महाभारत प्रसिद्ध हो चुकी थी।
2. ग्रीक यात्री दियो क्रिसोस्तोम 50 ई. में भारत आया था। उसने अपने यात्रा वर्णन में 1 लाख श्लोकों वाले इलियड का उल्लेख किया है जो महाभारत ही है।
3. अश्वघोष ने जिनका समय प्रथम शताब्दी है। अपने वज्रसूची नामक ग्रन्थ में हरिवंश तथा शांतिपर्व से श्लोक उद्धृत किये हैं।
4. आश्वालयन गृह्यसूत्र में भारत और महाभारत दोनों नाम पाये जाते हैं। बोधायन धर्मसूत्र में गीता का एक श्लोक एवं विष्णुसहस्त्रनाम का उल्लेख है। इनका रचनाकाल 400 ई. पू. के लगभग है।
5. महाभारत की रचना पाणिनि से पूर्व हो चुकी थी। पाणिनि ने महाभारत का उल्लेख किया है।
6. महाभारत का युद्ध द्वापर के अंत में और कलि के प्रारम्भ में हुआ था जो 31000 ई. पू. है। व्यास महाभारत के समकालीन हैं। युद्ध के पश्चात् इस ग्रन्थ की रचना का प्रारम्भ हुआ। अतः महाभारत की रचना की पूर्व सीमा 3000 ई.पू. है। महाभारत के युद्ध का सर्वप्रथम उल्लेख शांखायन श्रौतसूत्र में मिलता है। अथर्ववेद में भी राजा परीक्षित का वर्णन मिलता है।

अतः महाभारत की रचना की पूर्व सीमा 3000 ई. पू. एवं अपर सीमा 400 ई. पू. है। चतुर्थ शती ईसा पूर्व तक महाभारत का वर्तमान रूप स्थिर हो चुका था।

12.4.4 ग्रन्थ परिचय

महाभारत 18 पर्वों में विभाजित विशालकाय ग्रन्थ है। ये अठारह पर्व हैं आदि पर्व, सभा पर्व, वन पर्व, विराट पर्व, उद्योग पर्व, भीष्म पर्व, द्रोण पर्व, कर्ण पर्व, शल्य पर्व, सौप्तिक पर्व, स्त्री पर्व, शांति पर्व, अनुशासन पर्व, आश्वमेधिक पर्व, आश्रम वासिक पर्व, मौसल पर्व, महाप्रस्थानिक पर्व, स्वर्गारोहण पर्व। इसमें कुरुवंशी राजाओं की कथाएं, कौरव–पांडव युद्ध के अतिरिक्त अनेको आख्यान – उपाख्यान भरे पड़े हैं जिनमें धर्म, आचार, नीति की शिक्षा दी गई है। इसके प्रसिद्ध उपाख्यान हैं – शकुन्तलोपाख्यान, मत्स्योपाख्यान, रामोपाख्यान, शिवि उपाख्यान, सावित्री

उपाख्यान, नलोपाख्यानादि। हरिवंश परिशिष्ट में श्रीकृष्ण की कथा एवं यदुवंशियों के चरित्रों का वर्णन है।

भीष्म पर्व में प्रसिद्ध गीता का उपदेश श्री कृष्ण के द्वारा अर्जुन को दिया गया है। इसके अतिरिक्त गजेन्द्रमोक्षस्तव, विष्णुसहस्त्रनाम, भीष्मराजस्तव तथा अनुगीता स्तोत्र ग्रन्थ भी महाभारत के ही अंश हैं।

महाभारत न केवल महाकाव्य है अपितु इतिहास एवं धर्मशास्त्र भी है। महर्षि व्यास ने इसमें लोक और वेद का अपूर्व समन्वय किया है। यह तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को अपने में समाहित कर एक आचार संहिता ही बन गया है। इसीलिये इसे पंचम वेद कहा गया।

12.4.5 महाभारत के टीकाकार

डॉ. सुक्थंकर के अनुसार महाभारत की 22 टीकाएं है। डॉ. राघावल्लभ त्रिपाठी के अनुसार 36 है। डॉ. बलदेव उपाध्याय के अनुसार 'महाभारत के टीकाकारों की एक दीर्घ परम्परा है जिसके अन्तर्गत बड़े विद्वानों तथा अध्यात्मवेत्ता सन्यासियों की गणना है।' अर्जुनमिश्रा की भारतार्थदीपिका, नीलकंठ की भारत भावदीप सर्वाधिक प्रसिद्ध टीकाएं हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कुछ टीकाएं निम्न हैं —

देवबोध की ज्ञान दीपिका 1200 ई., विमलबोध कृत विषमश्लोकी 1050 ई., नारायण सर्वज्ञ कृत भारतार्थ प्रकाश टीका 1250 ई., वैशंपायन की टीका, चतुर्भुजमिश्र कृत भारतोपाय प्रकाश 1300 ई. आदि प्रमुख हैं।

12.4.6 महाभारत का वैशिष्ट्य

महाभारत संसार का विशालतमः काव्य ग्रन्थ है। यह रामायण से चार गुना एवं होमर के इलियड और ओडिसी की संयुक्त काया से आठ गुना विशाल है। अपने वेद– ज्ञान से समृद्ध प्रज्ञा चक्षुओं से आरपार देखने में समर्थ महर्षि वेदव्यास द्वारा लोक और वेद दोनों का समन्वय करते हुए संसार की निःसारता के यथार्थ को समक्ष रख कर वैराग्य का संदेश दिया गया है। इसका वैशिष्ट्य स्वयं महाभारत में इस प्रकार बताया गया है — ''वह सर्वप्रधान काव्य, सब दर्शनों का सार, स्मृति, इतिहास, चरित्रचित्रण की खान और पंचम वेद है। जैसे दही में मक्खन, मनुष्यों में ब्राह्मण, वेदों में आरण्यक, औषधियों में अमृत, जलाशयों में समुद्र और चतुष्पादों में गौ श्रेष्ठ है उसी प्रकार समस्त इतिहासों मे यह भारत श्रेष्ठ है।''

भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म की त्रिवेणी का जैसा संगम महाभारत में पाया जाता है वैसा कहीं अन्यत्र नहीं। विषयों की विविधता और ज्ञान राशि की निधि के कारण ही इसे विश्वकोषात्मक स्वरूप प्राप्त हुआ है।

डॉ. कपिल देव द्विवेदी ने महाभारत के वैशिष्ट्य पर अपने विचार इस प्रकार रखे हैं — ''महाभारत एक नहीं, अनेक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें विभिन्न संस्कृतियों का सम्मिश्रण, राष्ट्रीय भावना का उदय, आसुरी प्रवृतियों के दमन का प्रयास, भौगोलिक अनेकता में एकता, जीवन दर्शन की व्यावहारिक दृष्टि से व्याख्या, अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता, महिलाओं में अबलात्व के परित्याग की प्रवृत्ति, राजनीति कूटनीति–छद्मनीति और अनीति का व्यावहारिक प्रदर्शन, राजधर्म का सर्वांगीण निरूपण, आख्यान साहित्य का अक्षय कोष, नीतिशास्त्र की बहुमूल्य निधि एव चतुर्वर्ग की सभी समस्याओं का समाधान है .... इसमें विरूपता में एकरूपता, अनेकता में एकता, विश्रृंखला में समन्वय, व्यवहार में आदर्श, अशांति में शांति, प्रेय में श्रेय और धर्मार्थ में मोक्ष का समन्वय है।''

महाभारत में मिलने वाले काव्य चिंतन के सूत्र अलंकारशास्त्र के लिये आधार बने। महाकाव्य का

लक्षण, माधुर्य श्लेषादि गुणों, अलंकारों के बीज महाभारत में मिलते हैं। महाभारत के अनेक श्लोक, रस भावादि के उदाहरण के रूप में काव्यशास्त्रियों द्वारा दिये गये हैं।

महाभारत वस्तुतः अध्यात्म का संदेश देने वाला महाकाव्य है। यह संसार और जीवन की नश्वरता का संदेश देता है और धर्म को परम कर्तव्य के रूप में प्रतिष्ठित करता है –

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।।

12.5 रामायण – महाभारत की तुलना

वाचस्पति गैरोला के शब्दों में – ''वाल्मीकि और व्यास भारतीय साहित्याकाश के दो प्रोज्ज्वल नक्षत्र साहित्य साधना के इस अनन्त राजमार्ग के दो अविश्रान्त पथिक, विभिन्न युगों की दो प्रकाशमान प्रतिभाएँ और सृष्टि के साथ सदाशय रूप में रात–दिन की तरह चलने वाली दो अक्षय विभूतियाँ हैं।''

भारतीय संस्कृति के शताब्दियों तक वाहक, प्रसारक एवं उन्नायक ये दोनों ग्रन्थ न केवल महाकाव्य हैं, अपितु उपजीव्य, आर्ष, इतिहास एवं विकसनशील भी हैं। दोनों की कुछ समानताओं को परिगणित किया जा सकता हैं–

1. दोनों के प्रणेता एक पात्र के रूप में स्वयं उपस्थित हैं। तथा कथा को नई दिशा भी देते हैं, अपने पात्रों को समय–समय पर मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान करते हैं।
2. दोनों ग्रन्थों की नायिकाओं के जन्म में अलौकिक तत्व विद्यमान है। सीता का जन्म पृथ्वी से और द्रौपदी का यज्ञकुंड से हुआ। दोनों का विवाह स्वयंवर विधि से उनके पिता की शर्त के अनुसार हुआ। दोनों में युद्ध का कारण दोनों का अपमान या हरण है।
3. दोनों ग्रन्थ दुःखान्त हैं एवं दोनों के नायक संसार एवं जीवन की विषमताओं को भोगते हैं।
4. दोनों में अधर्म पर धर्म की, अन्याय पर पर न्याय विजय दिखाई गई है।
5. दोनों ग्रन्थों के नायकों को वनवास होता है।

दोनों में पर्याप्त समानताएँ होने के उपरान्त भी दोनों में पर्याप्त वैषम्य है।

1. रामायण में चौबीस हजार श्लोक हैं जबकि महाभारत में एक लाख। रामायण केवल एक व्यक्ति की तथा एक काल की कृति है जबकि महाभारत तीन चरणों में अनेक काल खंडों में पूरा हुआ है। रामायण आदिकाव्य है और इसका काव्यगत चमत्कार अत्यधिक महत्वपूर्ण है जबकि महाभारत इतिहास ग्रन्थ है।
2. रामायण में एक नायक है और आद्यन्त राम के चरित्र का ही प्राधान्य है। महाभारत में अनेक नायक हैं और यह एक व्यक्ति की गुणगाथा नहीं है।
3. रामायण के पात्र आदर्श हैं। नायक सर्वगुण–सम्पन्न एवं दोषमुक्त है, प्रतिनायक दुर्गुणी है। महाभारत में कौरव एवं पांडव दोनों पक्षों में अच्छे व बुरे लोग हैं। रामायण में जहाँ आदर्श भ्रातृप्रेम का चित्रण है वहां महाभारत का मूलाधार भ्रातृद्रोह है। रामायण में राम निर्विकार भाव से राज्य छोड़ देते हैं, भरत उसे भाई की धरोहर समझकर निर्विकार भाव से संभालते हैं। महाभारत राज्य प्राप्ति के अनेक कुचक्रों एवं षडंयत्रों से भरा हुआ एवं सुई की नोक जितना राज्य भी भाई को न देने की गाथा कहता है।

रामायण – महाभारत की सटीक तुलना करते हुए डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी का कथन है – ''रामायण का मूल स्वर करूणा का है, जबकि महाभारत का मूल स्वर वैराग्य का है। इसलिये रामायण में करूण रस की प्रधानता मानी गयी और महाभारत में शांत रस की। वाल्मीकि की रचना प्रेम, स्नेह, ममता, वात्सल्य और सौहार्द की भावनाओं से ओत–प्रोत है। महाभारत समाज में व्याप्त हिंसा, घृणा और कलह का यथार्थ चित्रण करता है, जिसकी परिणति वैराग्य में होती है। वाल्मीकि की रचना आदर्शपरक है। व्यास की

यथार्थपरक। एक में भावतत्व की प्रधानता है, दूसरे में बुद्धि तत्व की। रामायण काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से अधिक सुसम्बद्ध और सुसंगत रचना है। महाभारत में इसकी अपेक्षा ऐतिहासिक तथ्यों और विवरणों की बहुलता है। भाषा की दृष्टि से भी रामायण की भाषा अधिक लालित्यपूर्ण है और महाभारत की अधिक तथ्यपरक। शैली की दृष्टि से भी रामायण में आलंकारिकता अधिक है और महाभारत में यथार्थपरकता अधिक है।''

12.6 सारांश

आपने भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की अमूल्य धरोहर एवं प्रेरणा स्त्रोत रामायण एवं महाभारत का अनेक दृष्टियों से अध्ययन किया। उनके रचनाकारों, रचनाकाल, परवर्ती युग पर प्रभाव, उनका क्रमिक रचना विकास, उनकी टीकाएं, चरित्र चित्रण, वैशिष्ट्य एवं महत्व तथा दोनों का तुलनात्मक अध्ययन कर दोनों ग्रन्थों का विस्तृत परिचय प्राप्त किया। आपने जाना कि किस प्रकार भारतीय साहित्य के साहित्यकार किसी न किसी रूप में इन दोनों ग्रन्थों से प्रभावित हैं और इनके ऋणी हैं।

12.7 शब्दावली

1. उपजीव्य काव्य – उपजीव्य काव्य वह कृति है जो अपने परवर्ती साहित्यकारों को दीर्घावधि तक प्रेरित करती रहती है।
2. शतसाहस्त्रीसंहिता – वह ग्रन्थ जिसमें 1 लाख श्लोक हैं, यह महाभारत के लिये प्रयुक्त हुआ है।
3. परिशिष्ट – ग्रन्थ का वह भाग जो बाद में जोड़ा जाता है जैसे महाभारत का हरिवंश परिशिष्ट जो लोमहषर्ण के पुत्र सौति ने बाद में जोड़ा।

12.8 बोध प्रश्न

1. रामायण और महाभारत की उपजीव्यता पर प्रकाश डालिए।
2. रामायण और महाभारत की तुलना कीजिए।
3. राम और सीता का चरित्र चित्रण कीजिए।
4. रामायण के रचयिता और रचना काल का विवरण दीजिए।
5. महाभारत की रचना के क्रमिक विकास की विवेचना कीजिए।
6. महाभारत का वैशिष्ट्य बतलाइए।

12.9 उपयोगी ग्रन्थ

1. आचार्य बलदेव उपाध्याय – संस्कृत साहित्य का इतिहास।
2. चन्द्रशेखर पांडेय एवं व्यास – संस्कृत साहित्य की रूपरेखा।
3. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी – संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास।
4. डॉ. रामजी उपाध्याय – संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास।
5. डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल – संस्कृत साहित्य का इतिहास (लौकिक खंड)।
6. डॉ. कपिल देव द्विवेदी – संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास।
7. वाचस्पति गैरोला – संस्कृत साहित्य का इतिहास।

12.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्नों के उत्तर इकाई के 12.2, 12.3, 12.4, एवं 12.5 से देखें।